Academe *Journal of Education & Psychology*
Volume-14, Issue-2, Year-2024 (July-December)
PP: 124-127 *ISSN: 2249-040X*

हिन्दी गद्य साहित्य का प्रवर्तन और भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का योगदान

रणधीर कुमार पासवान

शोधार्थी

विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

हिन्दी साहित्य में गद्य साहित्य का प्रवर्तन और साहित्यिक भूमिका प्रदान करने का प्रयास सर्वप्रथम बाबू भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने किया था। इनका प्रभाव और साहित्य दोनों पर गहरा पड़ा। उन्होंने जिस प्रकार गद्य की भाषा को परिमार्जित करके उसे बहुत ही चलता, मधुर और स्वच्छ रूप दिया, उसी प्रकार हिन्दी साहित्य को भी नए मार्ग पर लाकर खड़ा कर दिया। उनके भाषा संस्कार की महत्ता को सब लोगों ने मुक्त कंठ से स्वीकार किया और वे वर्तमान हिन्दी गद्य के प्रवर्तक माने गए। भारतेन्दु की साहित्यिक यात्रा संवत् 1922 ई. से हुई जब इन्होंने अपने परिवार के साथ जगन्नाथ जी गए। इसी यात्रा में इनका परिचय नवीन साहित्यिक प्रगति से हुआ। उन्होंने बँगला में नए ढंग के सामाजिक, देश-देशान्तर संबंधी ऐतिहासिक और पौराणिक नाटक, उपन्यास आदि देखे और हिन्दी में वैसी पुस्तकों के अभाव का अनुभव किया।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने संवत् 1925 ई. में 'विद्यासुन्दर' नाटक में बँगला से अनुवाद करके प्रकाशित किया। इस अनुवाद में उन्होंने हिन्दी गद्य का बहुत ही सुडौल रुप का आभास दिया। इस प्रकार जब भारतेन्दु हरिश्चन्द्र अपनी मँझी हुई परिष्कृत भाषा सामने लाए तब हिन्दी बोलने वाली जनता को गद्य के लिये खड़ी बोली का प्राकृत साहित्यिक रूप मिल गया और भाषा के स्वरूप का प्रश्न न रह गया। संवत् 1924 ई. में ही इन्होंने 'कविवचनसुधा' नामक एक पत्रिका निकाली जिसमें पहले इन्होंने कवियों की कविताएं छपा करती थीं पर पीछे गद्य लेख भी रहने लगे। 1730 में उन्होंने 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' नाम की मासिक पत्रिका निकाली जिसका नाम 8 संख्याओं के उपरांत 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' हो गया। हिन्दी गद्य का ठीक परिष्कृत रूप पहले पहल इसी चन्द्रिका में हुआ।

हिंदी गद्य साहित्य के इस आरंभिक काल में ध्यान देने की बात है कि उस समय जो थोड़े से गिनती के लेखक थे, उनमें विद्वता और मौलिकता थी और उनकी हिन्दी हिन्दी होती थी। जिस प्यारी हिन्दी को देश ने अपनी निवृत्ति समझा, जिनको जनता ने उत्कंठापूर्वक दौड़कर अपनाया, उनका दर्शन 'हरिश्चंद्र चन्द्रिका' पत्रिका में हुआ। भारतेन्दु ने नई सुधरी हुई हिन्दी का उदय इसी से माना गया। हिन्दी गद्य साहित्य के इस आरंभकाल में ध्यान देने की बात है कि उस समय जो थोड़े गिने-चुने लेखक थे, उनमें विद्वता और मौलिकता थी। वे अपनी भाषा की प्रकृति को पहचानने वाले थे। बँगला, मराठी, उर्दू, अँग्रेजी के अनुवाद का वह तूफान जो पच्चीस-तीस वर्ष पीछे चला और जिसके कारण हिन्दी का स्वरूप ही संकट में पड़ गया। उस समय में ऐसे लेखक न थे जो बँगला की पदावली और वाक्यों को ज्यों-के-त्यों रखते हों या अँग्रेजी वाक्यों और मुहावरों का शब्द अनुवाद करके हिन्दी लिखने का दावा उस समय में हिंदी में 'दिक् दिक्' अशांति थी।

'हरिश्चंद्र मैगजीन' में प्रकाशित भारतेन्दु हरिश्चंद्र का 'पाँचवे पैगंबर', मुंशी ज्वाला प्रसाद का 'कलिराज की सभा', बाबू तोताराम का 'अदभुत अपूर्व स्वपन', बाबू कार्तिक प्रसाद का 'रेल का विकट खेल' प्रकाशित हुआ और इसे लोग बहुत चाव से पढ़ते थे। भारतेन्दु की भाषा पाठक और लेखक के बीच पुल का काम करने वाली थी। भारतीय हिन्दू सही मायनों में आधुनिक हिन्दी गद्य के सूत्रधार भारतेन्दु हरिश्चंद्र थे। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध

© Copyright @ Authors

तक हिन्दी गद्य का व्यापक प्रसार हुआ। साहित्य रचना के पर्याप्त अवसर भी प्राप्त हुए। इसी समय भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने साहित्य के क्षेत्र में अपना कदम रखा। इन्होंने हिन्दी गद्य साहित्य को एक नई दिशा दी। रामचंद्र तिवारी के अनुसार भारतेन्दु हरिश्चंद्र 'आधुनिक हिन्दी साहित्य के जन्मदाता और भारतीय नवोत्थान के प्रतीक हैं।' रामविलास शर्मा के अनुसार 'हिंदी की जातीय परंपरा के संस्थापक।" भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने खड़ी बोली गद्य को साहित्यिक रूप प्रदान किया और इसी साहित्य के माध्यम से उन्होंने जन-जन तक अपनी बात पहुँचाई। 'कविवचन सुधा' (1867 ई.), 'हरिश्चंद्र चन्द्रिका' और 'हरिश्चंद्र मैगजीन' के माध्यम से इन्होंने हिन्दी साहित्य का नया आयाम प्रदान किया। उन्होंने गद्य के विविध विधाओं जैसे नाटक, निबंध, समालोचना आदि में नई परंपरा का सूत्रपात किया। वे भाषा के विकास के प्रबल पक्षधर थे। उनका मानना था कि—

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।

बिनु निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को शूल।।

भारतेन्दु हरिश्चंद्र का अपने समय के अनेक गद्य लेखकों को प्रेरित किया। उनके संबंध में आचार्य रामचंद्र शुक्ल का कथन है कि "साहित्य के एक नवीन युग के आदि प्रवर्त्तक के रूप में खड़े होकर उन्होंने यह भी प्रदर्शित किया कि नए या बाहरी भावों को पचाकर इस प्रकार मिलाना चाहिए कि अपने ही साहित्य के विकसित अंग से लगें। प्राचीन नवीन के इस संधिकाल में जैसी शीतल कला का संचार अपेक्षित था वैसी ही शीतल कला के साथ भारतेन्दु भारतेन्दु का उदय हुआ इसमें संदेह नहीं।" (हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ0-315)

भारतेन्दु हिन्दी साहित्य की गद्य विधा के आधार स्तम्भ हैं। यद्यपि हिन्दी गद्य-साहित्य का प्रारंभ मुंशी सदासुख लाल, इंशा अल्ला खां, लल्लू लाल एवं सदल मिश्र के द्वारा माना गया पर हिन्दी गद्य का नमूना मात्र था। भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने हिन्दी गद्य की भाषा को परिमार्जित तथा सुव्यवस्थित किया। भारतेन्दु के पूर्व राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द एवं राजा लक्ष्मण ने गद्य लेखन का कार्य किया पर उनकी भाषा दोषपूर्ण थी। भारतेन्दु ने उपरोक्त लेखकों के गद्य की त्रुटियों को परिष्कृत करने के साथ-साथ हिन्दी गद्य को व्यवस्थित किया। 19वीं शताब्दी और भारतेन्दु का काल सही मायने में पुनर्जागरण का काल था। औपनिवेशिक शासन काल में देश में नए-नए विचारों एवं भावनाओं का आगमन हो रहा था। ऐसे में जो राष्ट्रीय जागृति का प्रचार-प्रसार हो रहा था उसे भारतेन्दु ने हिन्दी साहित्य में स्थान प्रदान किया और तत्कालीन सन्दर्भों से जुड़ी रचनाएँ लिखीं। भारतेन्दु की कविता मुख्यत: दो धाराओं में प्रवाहित हुई है। एक ओर श्रृंगार रस एवं भक्ति रस से संपृक्त मर्मस्पर्शी कवित्त सवैया तथा दूसरी ओर स्वदेश प्रेम से सराबोर कविताएँ। उर्दू में भी वे 'रसा' उपनाम से कविताएँ करते थे। हिन्दी भाषा की सेवा में उन्होंने दो पत्रिकाएँ 'कविवचन सुधा' तथा 'हरिश्चंद्र मैगजीन' नामक पत्रिका प्रकाशित करवाया।

भारतेन्दु ने गद्य विद्या के विकास में अनुपम योगदान दिया। नाटक, निबंध तथा आलोचना का तो प्रारंभ भी वास्तविक रूप में भारतेन्दु की ही लेखनी से हुआ। भारतेन्दु के प्रभाव से उनके अल्प जीवनकाल में लेखकों का एक मंडल तैयार हो गया था जिसे भारतेन्दु मंडल के नाम से जाना गया। इन मंडल के लेखकों ने भारतेन्दु हरिश्चंद्र के नेतृत्व में हिन्दी गद्य की सभी विधाओं में योगदान दिया। हिन्दी साहित्य की एक प्रमुख विद्या 'नाटक' का क्षेत्र में भारतेन्दु युग प्रवर्तक का रूप सामने आता है। इन्होंने हिन्दी में अनुदित तथा मौलिक दोनों प्रकार की रचनाएँ कीं। इनके रचनाओं में राष्ट्रीय जागरण का छाप स्पष्ट रूप में दिखाई पड़ता है तथा वे पूर्णतया मंचनीय हैं। 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति', 'चंद्रावली', 'विषस्य विषमौषधम्', 'भारत-दुर्दशा', 'नील देवी', 'अंधेर नगरी', 'प्रेम-जोगिनी', 'सती-प्रताप' इत्यादि इनकी मौलिक रचनाएँ हैं। इसके अलावा भारतेन्दु के कई नाटकों का हिन्दी अनुवाद भी किया।

© Copyright @ Authors

गद्य रचना के अंतर्गत भारतेन्दु का ध्यान पहले नाटकों की ओर ही गया। अपनी 'नाटक' नामक पुस्तक में उन्होंने लिखा है कि हिंदी में मौलिक नाटक उनके पहले दो ही लिखे गए थे— महाराज विश्वनाथ सिंह का 'आनंद रघुनंदन' नाटक और बाबू गोपालचंद्र का 'नहुष नाटक'। कहने की कोई आवश्यकता नहीं कि ये दोनों ब्रजभाषा में थे।

भारतीय साहित्य में भारतेन्दु हरिश्चंद्र का लेखन समाज सुधार की भावना से प्रेरित था। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज में व्याप्त कुरीतियों और अंधविश्वासों के खिलाफ आवाज उठाई। इसलिए उन्हें हिन्दी साहित्य के नवजागरण का अग्रदूत माना जाता है। भारतेन्दु ने अपने समय के समाज के विभिन्न पहलुओं को गहराई से समझा और हिन्दी साहित्य में स्थान दिया, जिससे गद्य साहित्य को एक नया आयाम मिला। इन्होंने गद्य साहित्य की विशेषताओं को उनकी सरल और सहज भाषा, स्पष्टता और प्रभावशीलता थी। उनकी गद्य रचनाओं में समाज के विभिन्न पहलुओं का यथार्थ चित्रण मिलता है। उनकी गद्य रचनाएं समाज सुधार की दिशा में प्रेरित करने वाली थीं।

हिन्दी साहित्य में आधुनिक हिन्दी काल के आगमन से ही हिन्दी गद्य विधा के रूप में खड़ी बोली गद्य का आरंभ माना गया है। खड़ी बोली गद्य साहित्य में प्रतिष्ठा पाने वाले भारतेन्दु हरिश्चन्द्र हैं। भारतेन्दु जी शुरु से खड़ी बोली का गद्य साहित्य इस समय उन्नति के चरम शिखर पर आसीन है। मूल रूप से खड़ी बोली गद्य के जन्मदाता भी हैं। अगर हम हिन्दी गद्य के विकास के चरण को देखेंगे–

(क) प्रथम चरण- भारतेन्दु युग (सन 1857 से 1900 तक)

(ख) द्वितीय चरण- द्विवेदी युग (1900 से 1918 तक)

(ग) तृतीय चरण- शुक्ल प्रेमचन्द प्रसाद युग (सन् 1918 से 1938 तक)

(घ) चतुर्थ चरण- प्रगतिवादी युग (सन् 1938 से 1947 तक)

(ङ) पंचम चरण- स्वातन्त्र्योत्तर युग (1947 से अब तक)

अब जिस समय खड़ी बोली गद्य अपने आरंभिक रूप में ही थी, उसी पल हिन्दी साहित्य में सौभाग्य से बाबू भारतेन्दु हरिश्चन्द्र साहित्य के क्षेत्र में प्रवेश किया। उन्होंने राजा शिवप्रसाद तथा राजा लक्ष्मण सिंह की आपसी विरोधी से उत्पन्न द्वैध में समन्वय स्थापित किया और सरल रास्ता अपनाया। इन्होंने ही बोलियों में रचना की जो बोलचाल की दृष्टि से शुद्ध हिन्दी शैली जिसमें साधारण तथा सरल विषयों पर लिखा। इस काल में हिन्दी के प्रचार में जिन पत्र-पत्रिकाओं ने विशेष योगदान दिया, उनमें 'उदन्त मार्तण्ड' 'कवि वचन सुधा' तथा 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' अग्रणी थे।

संदर्भ सूची–

1. हिन्दी साहित्य कोश- भाग-1, संपादक - धीरेन्द्र वर्मा, ज्ञानमंडल प्रकाशन वाराणसी, 1961ई.
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास- रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, प्रथम संस्करण, 1929ई. पृ.- 315
3. हिन्दी गद्य : विन्यास और विकास, डॉ. रामस्वरुप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद पृ.- 165ई.
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास, सं. डॉ. नगेन्द्र, मयूर पेपर बैक्स, 2007ई.
5. हिन्दी आलोचना - विश्वनाथ त्रिपाठी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2009ई.

© Copyright @ Authors

6. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास (भाग- 1, 2)- गणपतिचन्द्र गुप्त, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, 2010ई.
7. हिन्दी नाटक : उद्भव और विकास- डॉ. दशरथ ओझा, राजपाल एण्ड संस, नई दिल्ली, 2008ई.

© Copyright @ Authors